हिन्दी विभाग

स्नातक प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष (I, II, III, IV, V, VI समैस्टर)
पाठ्यक्रम उपयोगिता

वैश्विक स्तर पर हिन्दी के बढ़ते महत्व को ध्यान में रखते हुए किसी भी कक्षा में लगाया पाठ्यक्रम के प्रभावी उपयोग को नकारा नहीं जा सकता। विश्व स्तर पर बोली, समझी और लिखी जाने वाली भाषाओं में नम्बर तीन पर अवस्थित हिन्दी आज किसी परिचय की मोहताज नहीं है। राष्ट्रीय स्तर की लगभग सभी प्रतियोगी एवं प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं का माध्यम बनकर हिन्दी आज हर दिशा में अपना परचम लहरा रही है। राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय विज्ञापनी बाज़ार की शोभा बनी यह भाषा अपने फलक में सुदीर्घ लम्बे अनुभवों को समेटे हुए आज वाणिज्य, विज्ञान, ज्ञान एवं औद्योगिक जगत् की तमाम अपेक्षाओं पर खरी उतरते हुए शायद यह बताने के प्रयास में है कि हिन्द देश में हिन्दी का अस्तित्व मिटाने वाली विदेशी ताकतों मेरे अस्तित्व को पहचानने में शायद तुमने भूल कर दी थी। देश का कोई भी बुद्धिजीवी नागरिक चाहे वह अन्य कितनी भी भाषाओं का ज्ञाता हो, हिन्दी के महत्व को कमतर नहीं आँक सकता। अपने युग की विषमताओं को वाणी का ताज हम हिन्दी का ही पहना सकते हैं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'साहित्य की महत्ता' निबन्ध में लिखा है – "साहित्य में जो ताकत है, वह तोप, तलवार या बम के गोलों में नहीं है।"

जहाँ तक स्नातक प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के पाठ्यक्रम की उपयोगिता का प्रश्न है उसके संदर्भित पहलू ये हो सकते हैं।

* विद्यार्थी पढ़कर अध्यापन के क्षेत्र में जा सकते हैं, जिसमें स्कूल स्तर से कॉलेज एवं विश्वविद्यालयी स्तर पर अध्यापकीय आजीविका को प्राप्त किया जा सकता है।

* छात्र–छात्राओं को आज हिन्दी में कम्प्यूटर, इन्टरनेट, ई–मेल एवं मशीनी अनुवाद का जो पाठ्यक्रम पढ़ाया जा रहा है उससे तो नौकरियों के बहुत द्वार खुल रहे हैं। बैंकिग क्षेत्र में तो विद्यार्थी जा ही रहे हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी अनुवादक (Translator) की नौकरी तो हर सरकारी एवं गैर–सरकारी कार्यालयों के अन्दर मिल सकती है। अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी पढ़ाने का कार्य भी सुगमता से किया जा सकता है।

* पत्रकारिता आज का उभरता हुआ नौकरी का पहलू है। इस Course को पढ़कर और आगे बढ़ाकर इस क्षेत्र में भी आजीविका कमा सकते हैं।

* आकाशवाणी एवं दूरदर्शन भी इस दिशा में सकारात्मक भूमिका निभा रहा है। यहाँ भी अपार संभावनायें मौजूद हैं।

* मनोरंजन एवं खेलकूद के क्षेत्र में भी हिन्दी आजीविका प्राप्ति के प्रयासों को नकारा नहीं जा सकता।

* हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादकीय क्षेत्र भी अपार संभावनाएं समेटे है। प्रूफ रीडर की नौकरी भी एक अच्छा विकल्प है।

* हिन्दी कम्प्यूटर एवं उसकी तकनीकी जानकारी एवं कोर्स करने के उपरांत तो देश–विदेश में कहीं भी विद्यार्थी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ तक कि घर बैठ कर भी धन उपार्जन कर सकते हैं।

* आज सोशल मीडिया ने बहुत सारे कार्यक्रम एवं चैनलों के माध्यम से ऐसे क्षेत्रों में भी नौकरी की संभावनाएं पैदा कर दी है कि कुछ भिन्न सोच रख कर विद्यार्थी खाने, पहनावे और सौन्दर्य के क्षेत्र में खूब पैसा कमा सकता है बशर्ते कि हिन्दी भाषा का जानकार हो क्योंकि देश की भाषा को कम पढ़ा–लिखा भी समझ सकता है।

* प्राईवेट कम्पनियाँ भी इस दिशा में प्रयासरत हैं कि अपनी प्रोडक्ट बेचने एवं खरीदने हेतु अच्छी हिन्दी की समझ रखने वाले विद्यार्थी चाहिए ताकि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कम्पनी का मुनाफा बढ़ाया जा सके। इस क्षेत्र में भी संभावनाएं बन रही हैं।

* साहित्यिक क्षेत्र में कवियों, लेखकों, आलोचकों ने हिन्दी का सम्पन्न साहित्य देश–दुनियाँ को देकर वैश्विक स्तर पर साख बनाई। प्रेमचंद जैसे स्वनामधन्य अनेक साहित्यकारों का साहित्य विश्व की कई भाषाओं में अनुदित हुआ और पढ़ा, पढ़ाया जा रहा है। बहुतेरे कवियों और लेखकों को अनेकों पुरस्कारों एवं राष्ट्रीय अलंकरणों से विभूषित किया गया और आज भी किया जा रहा है। उन्होंने तमाम उम्र हिन्दी सेवी बनकर साहित्यिक मंचों से लेकर गली, कूचों तक हिन्दी भाषा की अलख जगाई और स्वतंत्रता आन्दोलन में भी सारे देश को एकता के सूत्र में पिरोकर आज़ादी की लड़ाई में बढ़कर हिस्सेदारी की। आज़ादी की कीमत को आँकने वाली यह भाषा अपनी उपयोगिता स्वयं सिद्ध कर रही है। इस क्षेत्र में आगे चलकर विद्यार्थियों के लिए नए कारोबार एवं नौकरियों के द्वार खुलेंगे, ऐसा मेरा मानना है।